

सदा शुभकिङ्कमप्रकाशं च यत्नवत्तमम् ॥ इत्युक्तं
व पृथक् कथा योगसंपादनात् ॥ सर्वप्रकाशं नमः
सं सत्त्वसंदिताय ॥

संज्ञा ॥

॥ गन्धायं कानन वायुमधुः

संज्ञायं कानन वायुमधुः ॥ गन्धायं कानन वायुमधुः
पद्मलक्षणं नगुरक्षादिपुत्रिणम् ॥ उक्तं ज्ञानं ह्यं मां पां नौ वं का

आम फलम्
ASIA ARCHIVES

278

जज्ञा नयंचामृ नयंचामृ नयंचामृ ॥ इंद ४ इंद वहा ॥
॥ इंद ५ इंद यमाय स्वाहा ॥ इंद वनूय स्वाहा ॥ इंद कृय ना
य स्वाहा ॥ इंद जूमय स्वाहा ॥ इंद नैमय स्वाहा ॥ इंद नाय स्वाहा ॥ इंद ६ नाय स्वा
हा ॥ इंद ७ इंद वम स्वाहा ॥ इंद जू पिपिथ स्वाहा ॥ इंद सूर्याय स्वाहा ॥ इंद धिय न स्वाहा
॥ इंद चान कृ गा धिय न स्वाहा ॥ इंद नागय स्वाहा ॥ इंद य कृय ४ स्वाहा ॥ इंद ज
सूरय स्वाहा ॥ इंद सर्वदाग स्वाहा ॥ ॥ इंद वगग न स्वा

हा ॥ इंद वज्र धूप स्वाहा ॥ इंद वज्र वासम स्वाहा ॥ इंद वज्र पूष स्वाहा ॥ इंद वज्र नेवय
स्वाहा ॥ इंद वज्र दिप स्वाहा ॥ वज्र नाकाय स्वाहा ॥ ॥ इंद वज्र सत्वम
गहा गवज वत्तम नूरुजा ॥ वज्र धर्म इहाय न ॥ वज्र कर्म कृत्वा रुवहा ॥ इंद ८
कि ४ इंद १ इंद दया महा वी वा ॥ लोकपाला महा द्वि का ॥ की नयं कु दक्ष
की छवि दृ द्वा नम रु ग ॥ ॥ विजय म वृद्ध ही मं दिव स क
न धजा जसिया वि दू ज म च गा न ॥ मे यं वा न वृ प ॥ विजय वि वत न न म

श्रुत्वा च तानां यथा हृदये नृपं कृत्वा न जव पूषं वा कृत्वा न शी दी। विहाः
न ह्यनन्यो निहिन हवर्ग्यं पंचमूर्तिपञ्चमः ॥ १ ॥
स्वयं न ह्य ॥ २ ॥ इन्द्रादिवर्जितसु दवस्य जीमन्तवलि विजिह्व नृपि
यमने मत्त रूपतिष्ठ जूपापति वायूधनाधिपश्च ॥ ३ ॥ निरुताधिपः
मिध्व दवा ॥ ४ ॥ उर्ध्व चन्द्रा कपिनाम हश्च दवा समस्तारुची च नामा ४४
जाध जागुर्धगस्त समस्त पतिपतिना कनिवदय कु। स्वका स्वका च व

दिवा मरुता गृह्णतु रक्षा मरु लास संना ॥ १ ॥ सपृग्दजा मरु रक्ष संघा
४ पूषं वलि धपं विलेप न चर ४ गृह्णतु उ गृह्णतु पीव नृ च द नृ ॥ २ ॥ दंत कः
मं मरु लं रं ग नृ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ इन्द्रादिवर्जितसु दवस्य जीमन्तवलि विजिह्व नृपि
नय मत्तवर्जको धाय दक्ष कट रेजवय अस्मिन् नय नृपि ४ गृह्णतु
रक्षा य उर्ध्व मृग कृत्वा लि त्वर रक्षा हि र मिष्ट २ न चर ह न र द ह रं गः
रं र विष्ठाट्य र रं र विष्ठाट्य रं रं मत्ता गता पति ४ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥

नमो देव जय नमो ज्ञापयति उं आ १ हं रुट ॥ ॥ ये १ प १
 नमो ज्ञा ॥ ॥ य धर्माश्च कृपु १ र वा धा १ गु १ र १ क १ र १ ॥ य द न म धा १
 च या नि न ध १ च वं वा दि म हा सु म न ॥ उं अ व १ र्व ध र्मा नां मा १
 १ ध नू प द न १ त्वा ॥ उं आ १ हं रुट १ स्वा हा ॥ मे १ र १ न ह ता य वा धि म १
 १ ता १ म हा सु त्वा य १ म हा का नू नि का य १ गु नू त्वा व १ य १ मा शु न द कि १
 ना दानं म हा र्त्त प द १ ॥ ॥ ॥ ॥

१ उं न मा वृ द्वा या ॥ सु ग म पि सू च सं धे ॥ सि धि ग न्ध वृ द्वा १ क १ र्त्त १ दि १
 वि १ न वि सू वि वि ण १ म हा वि न नि १ मे ॥ नृ द म पि कृ न ग कि १
 ना मि समु द्र मा १ र्त्त १ न र सि व ग १ र १ द १ र्त्त १ नि १ क १ र्त्त १ नि १ दि १ ल १ र्त्त १ नि १ पि १
 इ ति ग प क १ र्त्त १ नि १ र्त्त १ व १ र्त्त १ नि १ क १ र्त्त १ नि १ क १ र्त्त १ नि १ क १ र्त्त १ नि १
 मा य नां १ र्त्त १ ग १ र्त्त १ नि १ पि १ र्त्त १ नि १ र्त्त १ नि १ र्त्त १ नि १ र्त्त १ नि १

ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
कुरु जगत्पथं भगवतः ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥

ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
कुरु जगत्पथं भगवतः ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥
ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥ ॐ नमो भगवते कृष्णाय ॥

नामो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ कथमसिद्धिं कुरु ॥ उच्यते
सिद्धिं साधु ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
साधु ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
जदगत्सिद्धिं साधु ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
पश्यत्युच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
॥ उच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते

पश्यत्युच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
वीने वज्रति सदा ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
हृदं हृदं ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
उच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
उच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
उच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते
उच्यते ॥ ॥ कार्यविलम्बेति साधु ॥ ॥ उच्यते



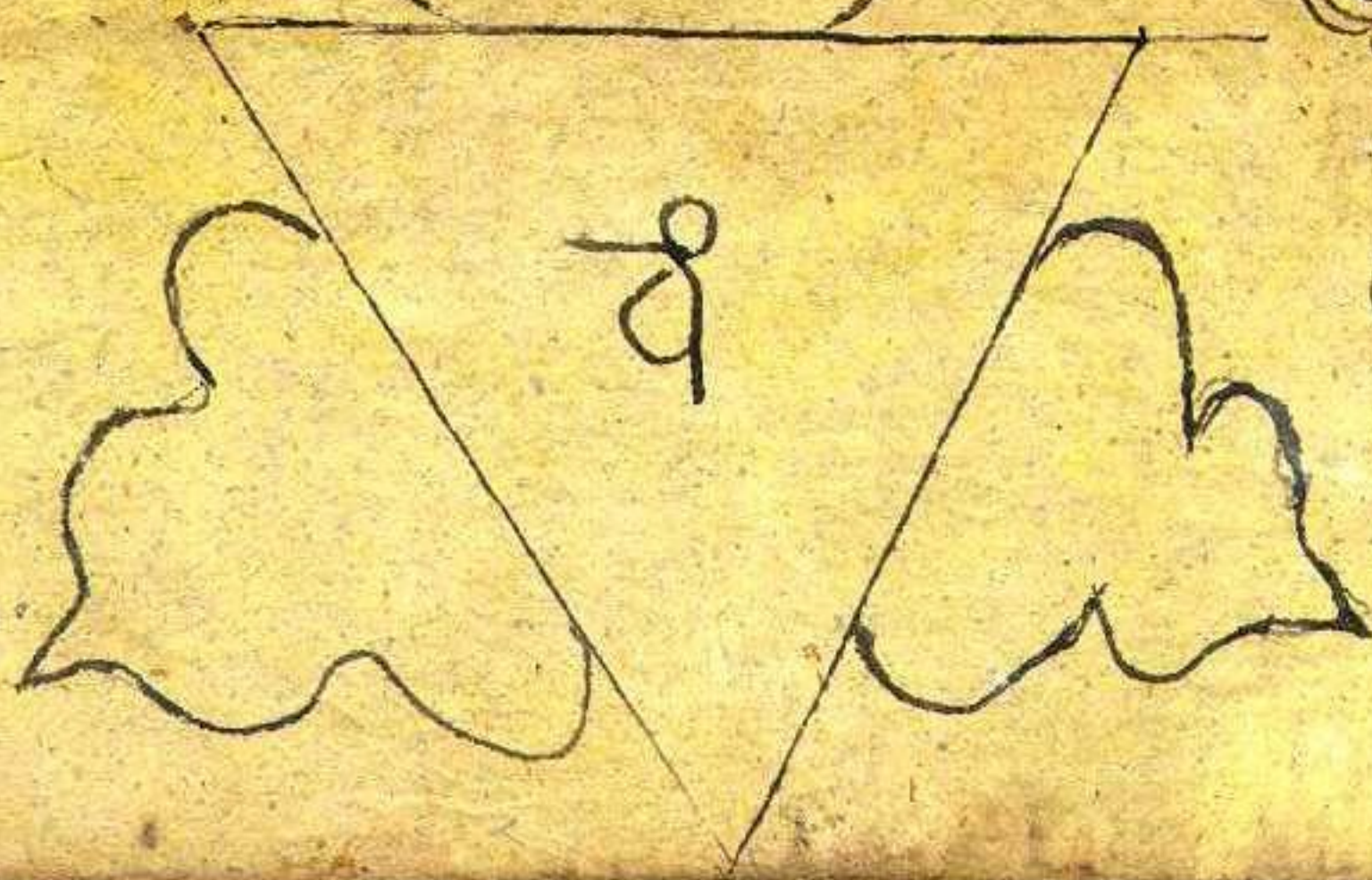
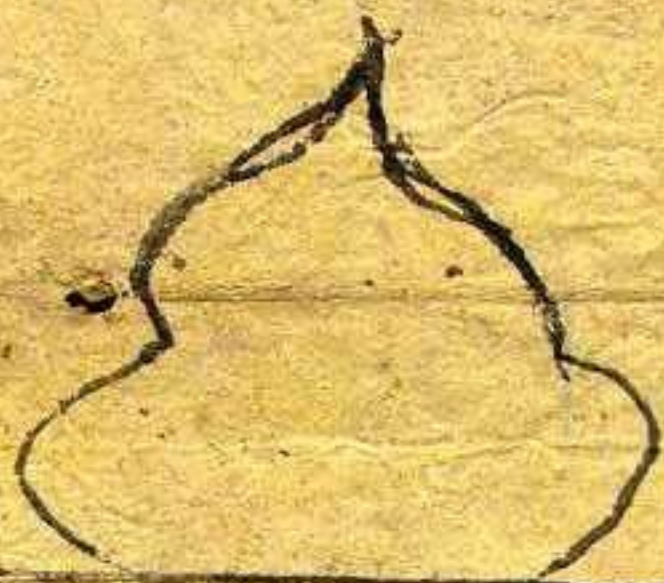
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो नमो ॥

आशा ३

278

ADVA ARCHIVES

कुमारि प्रया २३ द्वादको हुन गेके जे: कृपाया यने लति हु
नाउ ॥ हुं स्तुति ॥ ३ ॥ तीये ध्यान या वचन: जायने हु ॥ ४ ॥
यजन: दया दयने लति हुनाउ ॥ लोपिदि स्वप्न न जाना नो म
मिन् गाल या घाल ३: द्वादको हुन के ल्य सा जी ॥ हुं स्तुति ॥ ३ ॥



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----



११ २२ ३३ ४४ ५५ ६६ ७७ ८८ ९९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २०

२१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४०

४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५०

५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६०

६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७०

७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८०

८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९०

९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

१०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११०

99 २२ ३३ ४४ ५५ ६६ ७७ ८८ ९९
११० २२ ३३

९९

११०

